International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(II), April - June, 2024, pp. 248-251

रम्मत में प्रयुक्त लोकगायन शैलियाँ

Dr. Aruna Jangid*

सार

राजस्थान में लोक जीवन के विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति के लिए लोक नाट्य रचे गये है और उनका अपने तरीके से मंचन किया जाता है गीतों एवं नृत्य की प्रधानता के लिए नाट्यों में प्रतिकात्मक साज–सज्जा से ही पात्रों की पहचान हो जाती है। राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र में जीविका के लिए कठिन परिश्रम करने वाली जातियों में मनोरंजन का कार्य, नट, भाट आदि करते हैं। लोकनाट्य लोकनुरंजन का ही मात्र साधन नहीं होता अपितु वह लोकगत अर्जितानुभूतियों में से मानव के मूल अध्यात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। प्रस्तुत शोध में रम्मत लोक नाटय कला के सगींत पक्ष को उजागर करने पर कार्य किया गया है । रम्मत पूरी तरह सगींतात्मक संवाद के रूप में अभिनीत होता है। रंगमच के दर्शक कथानक से परिचित होते है इसलिए कथा से प्राप्त मंनोरनजन इनका लक्ष्य नहीं होता बल्कि रसानुभूति से प्राप्त तृप्ति इनके लिए संतोष की बात होती है। रम्मत में पारम्परिक वादय नगाडा वह हारमोनियम की प्रधानता हैं रम्मत में सारी रचनात्मक ऊर्जा संगीत से ही अभिव्यकत होती है राजस्थान आंचल में आज भी रम्मत की लोक गायन शैलियों का मंचन होली से पूर्व कई शहरों में होता हैं जिसमें हड़ाऊ मैरी,अमर सिंह राठौड़ वह नौट्की शहजादी रम्मत का आयोजन बीकानेर व चितौड़गढ़ वह भीलवाड़ा शहर में आज भी उत्साह से किया जाता है।

शब्दकोशः *रम्मत नगाडा लोकानुरंजन कथानक अभिव्यक्ति।*

प्रस्तावना

रम्मत में प्रयुक्त होने वाली शैलियों अपने आप से से इस नाट्य को पूर्णता प्रदान करती है जैसे– ख्याल– मूल कथा के साथ–साथ सहायक प्रसंग कथानक के साथ–साथ चलते हैं, ऐसे ख्याल बोरा बोरी का ख्याल, जोशी, जोगण का ख्याल, जाट–जाटनी का ख्याल इत्यादि।

- **चौमासा–** यह आमजन से जुड़ाव रखता है राजस्थान में सावन से प्रारम्भ मास से चार मास तक चौमासा कहलाता है। चौमासा अधिकांशतः कहरवा, दीपचन्दी, आदि तालों में होता है।
- **लावणी–** संगीत की दृष्टि से लावणी में स्थाई की दो पंक्तियां हाती है तथा अन्तरे में नौ पंक्तियां होती है। लावणियाँ ऊँची आवाज में गाई जाती है।
- **कवित–** आलापचारी के साथ गये जाने वाले दोहे को कवित कहा जाता है इसमें साज नहीं बजाए जाते।
- **मांड–** राजस्थान की सुप्रसिद्ध स्वरावली जिसे मांड राग या मांड गायन से जाना जाता है इसी राग में स्वरबद्ध दोहो को मांड कहा जाता है।

* PGT Music Teacher, MDS University, Ajmer, Rajasthan, India.

- **भजन–** अपने ईष्ट देवता की स्तुती एवं निर्गुण भजनों को रम्मत के मध्य में गाया जाता है। इसमें देवताओं का वर्णन होने से इन्हें भजन कहा जाता है।
- **रेखता–** इसकी पहली लाईन दुगुन में उसके बाद एक दोहा बिना साज के फिर से वही लाईन दोहराई जाती है।

इसी प्रकार लोकनाट्यों में गायन शैलियों की अहम भूमिका रहती है। इसके साथ दोहे, चौबोले, लहरे, शिकस्त, छंद इत्यादि का प्रयोग भी 'रम्मत' के अन्तर्गत होता है।

रम्मत में वर्तमान विषय के परिप्रेक्ष्य में गहन राजनीतिक मुददों पर लिखे दोहे,चौबोले व लावणी इत्यादि रचे जाते है व संगीत बद्व करके दर्शकों तक पहुँचाया गया है। शोध में रम्मत शब्द का अर्थ उसके विकास के तख्यों पर प्रकाश डाला गया हैं।

साहित्य की समीक्षा

लोक संगीत की परिभाषा व उत्पत्ति में राजस्थान के लोक संगीत की विशेषता व राजस्थान के लोकगीतों से किस प्रकार रम्मत लोकनाट्य के साहित्य की जानकारी प्राप्त होती है इसका वर्णन किया गया है। कई विद्वानों के प्रचलित मत लोक संगीत व उसके साहित्य के बारे में जानकारी देते हैं। लोक संगीत स्थानीय सांस्कृतिक परम्परा से प्रसूत होता है इसमें स्थानीय जन जनरूचि आचार–विचार सब कुछ घुला हुआ होता है।

लोकनाट्य का इहिास आज भी राजस्थान के जोधपुर, बीकानेर, चितौड़गढ़ इत्यादि शहरों में आज भी जीवित है। लोकनाट्य का साहित्य लोक शैली में है जिसे आम जनता सहज रूप से समझ सके। इसमें संगीत पक्ष की प्रधानता इस नाट्य को ओर रूचिकर बनाती है। कई वर्तमान 'रम्मत' के कलाकारों का साक्षात्कार इस शोध में किया गया है जिसमें हमें 'रम्मत' कला की उत्पत्ति व विकास व इसका पालन–पोषण कहाँ हुआ और आज भी यह भारत के उत्तरप्रदेश, राजस्थान में प्रदर्शित होने वाली कलाओं में से है। लोक संगीत की परिभाषा वह उत्पति में राजस्थान के लोक संगीत की विशेषता व राजस्थान के लोकगीतों से किस प्रकार रम्मत लोकनाट्य के लोकगायन शैलियों के साहित्य कि जानकारी प्राप्त होती है इसका वर्णन किया गया हैं कई विद्वानों के प्रचलित मत लोक संगीत वह उसके साहित्य के बारे में जानकारी देते है लोक संगीत स्थानीय सास्कृतिक परम्परा से प्रसूत होता है इसमें स्थानीय जनरूची आचार विचार सब घुला हुआ होता है।

उद्देश्य

लोककला अपने आप में एक परिपूर्ण कला है मैने बचपन से इस कला का प्रदर्शना देखा है तब से ही यह विचार मन में था कि मुझे इस कला के कलाकारों को प्रोत्साहित करना है और इसके विकास के लिए कार्य करना है।

- सर्वप्रथम इसका प्रदर्शन किसी उत्सव मात्र तक न रहकर हमारे बाकी सामाजिक उत्सवों व राष्ट्रीय स्तर पर इसका मंचन हो क्योंकि यह कला सिर्फ मनोरंजन का साधन मात्र नहीं है कलाकार इसमें जमाने के साथ–साथ चलने के लिए नए सृजन करता रहा है जिसमें ऐतिहासिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, सामाजिक मुद्दों पर नई पंक्तियाँ लिखी जाती है और उसको संगीतबद्ध करके सुर, ताल व नृत्य और अभिनय के साधन द्वारा आम जनता में जाग्रति फैलाने का कार्य भी करती है।
- इसमें प्राचीन वाद्य यन्त्रों का उपयोग करके कला को ओर आकर्षित बनाने का प्रयास किया जा सकता है आज भी युवा पीढ़ी भी बढ़–चढ़कर अपनी इस लोकनाट्य कला व संस्कृति को जीवित रखने में अपना सहयोग दे ऐसे प्रयासों के बारे में लिखा गया है। लोकसंगीत हमारे जीवन का आधार है और हमारें संस्कृति के आधार को सुरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है। सांगीतिक पक्ष जिसमें कई प्रकार की लोकगायन शैलियों का प्रयोग इस नाट्य कला में होता है उनको स्वर बद्व करके उसकी धुन को सुरक्षित रखने का कार्य भी करने का उद्देश्य रहा है।

शोधविधि

गीतों एवं नृत्य की प्रधानता के लिए नाट्यों में प्रतिकात्मक साज सज्जा से ही पात्रों की पहचान हो जाती है। अतः इस शोध कार्य को करने में मेरे लिए प्राथमिक प्रणाली जो साक्षात्कार प्रणाली है उससे मुझे ज्यादा सहायता मिली और साहितय को जानने के लिए द्वितीयक प्रणाली पुस्तकालयों का भी सहयोग किया गया है। राजस्थान में लोकजीवन के विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति के लिए लोकनाट्य रचे गये है इन लोकनाट्यों के अंतर्गत गायी जाने वाली लोक गायन शैलियों का मंचन लोक कलाकार अपने तरीके से मंचन करते है इस प्रकार लोक नाट्यों की आत्मा लोक गायन शैलिया हैं जिसका प्रभाव जन मानस पर अमिठ छाप छोडता है इस शोध प्रबंध में लोक कलाकारों के साक्षात्कार एवं उनके कार्यक्रम को सुनकर ही इस शोध प्रबंध में स्वर लिपी बध लोकगायन शैलियों का विवरण दिया गया है ।

प्राथमिक प्रणाली

शहर में गाँवों में लोकनाटक कला की तैयारियाँ शुरू हो जाती है कलाकार अभ्यास में जुट जाते हैं वो ही समय था साक्षात्कार का उनसे रूबरू मिलकर, देखकर ही इसके तथ्यों की ओर शोधकार्य को बढ़ाया गया है। साहित्यकार लक्ष्मीनारायण जी रंगा द्वारा शब्दों के अर्थ को समझने व नारायण जी रंगा और रामेश्वर जी सोनी द्वारा धुनों को समझने व लिखित रूप में उतारने में सहयोग प्राप्त किया गया।

- कलाकार जहाँ अभ्यास करते हैं उन अभ्यास स्थन पर जाकर छोटे–छोटे कलाकार तक साक्षात्कार विधि द्वारा इस कला के बारे में जानकारी जुटाई गई। होली के सुनहरे अवसर पर चारों और जब मंद मंद हवाऐं चलती है और पानी की फुआरें चित को प्रस्सनचित करती है तब शहर में रम्मत का आयोजन प्रारम्भ होता हैं सभी स्थानीय कलाकार अपनी पूर्ण सजकता से रम्मत लोक नाट्य कला के मंचन की तैयारीयों में जुट जाते है युवा वर्ग भी इस कला कें रंग से अछुता नहीं रहता इसके प्रसिद्व कलाकारों में बिस्सा आंनद, कन्हैया लाल जी रंगा वह आजाद मंडल के कलाकारों से प्राप्त साक्षात्कार की जानकारियाँ दी गई है

द्वितीय प्रणाली

लोकनाट्य के प्राचीन साहित्य व इतिहास की जानकारी के लिए बीकानेर अनूप संग्राहालय पुस्तकालय से और अजमेर के सावित्री कन्या महाविद्यालय बीकानेर के बिन्नानी कन्या महाविद्यालय चितौड़ के निजी पुस्तकालय से कई पुस्तकों का पठन करके उनका सहयोग किया गया जिसमें ''लोकनाट्यों में सगीत'' डॉ. ज्ञानवती वैद मोहता, डॉ. मनोहर शर्मा, सत्येन्द्र शर्मा इत्यादि की पुस्तकों से कुछ अंश अवतरण किया गया।

निष्कर्ष

राजस्थान की लोक कला 'रम्मत' का सांगीतिक अध्ययन में लोकनाट्य का प्रारम्भ से विकास तक का वर्णन किया गया है। संस्कृति के विकास के साथ–साथ इन नाट्यों का जन्म व संस्कृति से सम्बन्ध को बताया गया है। लोकनाट्यों में 'रम्मत' और ख्याल दोनों का उल्लेख है। रम्मत को ख्याल की एक शैली मानकर उसकी शास्त्रीयता से भिन्नता दिखाई गई है। बीकानेर में प्रचलित नाट्य प्रणालियां, लोकसंगीत, नृत्य, काव्य के लोक प्रचलित स्वरूप से है। अपनी पूर्ववर्ती परम्परा का अनुसरण और रचना धार्मिक की निरतंरता स्वतः ही कला में किसी नए आयाम की जन्मदाता का कारण रही है। राजस्थानी लोकनाटयों धुनों की बात करें तो बड़ी रोचक बात सामने आती है ये धुने ना ही शास्त्रीय से प्रेरित होती है और ना ही प्रचलित लोकगीतों से कुछ मेल खाती है वे किसी व्यक्ति विशेष की रचना भी नहीं होती। नाट्यकृति की किसी प्रकाशित प्रति से इसका मंचन संभव नहीं माना गया है। कई कलाकारों ने मुख से बताकर इस शोध कार्य को सरल बनाया। लोकटनाटकों में शास्त्रीयता के सम्बन्धों की स्वयं घोषणा नहीं की है। ऐसी स्थिति के लोकनाटकों के प्रचलन में कम अधिक का आरोप तो हो सकता है परन्तु उसकी निरन्तरता में कोई बाधा है यदि है तो मात्र आधुनिक परिवेश की। लोकनाट्यों की उत्पति लोक के मनोभावों जैसे समाज की आदिम प्रवतियां और भावनाएं और उसके हर्ष,

उल्लास, शोक, प्रेम, ईष्या, भय, आंशका, घृणा, आशचर्य, ग्लानी, भक्ति, आराधाना इत्यादि से होता है रामायण महाभारात के अनेक स्थलों पर और हिंदी साहित्य कि औज पूर्ण कविताओं में नौटंकी की चर्चा भले ना हो किंतु नौटंकी समाज के मनोरंजन का प्रधान साधन है नौटंकी का प्राण कहे जाने वाले और अवनद्व वाद्य नक्करा का वर्णन इस कला में विशेष रूप से अग्रणीय है सवांग भरना सवांग देखना यह सब आज के समाज में विलुप्त प्राय है इस सांस्कृतिक कला को सहेजने वह इसके मुल्यवान तख्यों को जीवित रखनें का प्रयास किया गया है सवांग किसी भी ऐसे प्रदर्शन को कहा जाता है जिसमें कोई कलाकार किसी विशेष पात्र को अपने कला के माध्यम से प्रस्तुत करता है लौकनाट्यों में कई प्रतापी व्यक्तियों पर सर्वाधिक संगीत रचे गये है। उन सब की धुनों को इस शोध प्रबंध में एकत्रित किया गया है देशभक्ति से परिपूर्ण तथा नैताओं के जीवन पर रचे गये सवांग में संगीत की रचनाएं रौमानचित करने वाली होती है आज भी नई राजनीति पर दौहै चौबौले लावणी इत्यादि रचकर आने वाली पीढ़ीयों को नया संदेश दिया जाता है हमारी प्राचिन संस्कृति को बचाने वह नई पीढ़ी को वरदान स्वरूप नई सस्कृति कि और एक कदम बढ़ाने का बढ़ाने का प्रयास किया गया है अभिव्यक्ति के लिए जो लोक नाट्य रचे गये है उनका इतिहास इस प्रबंध में सुरक्षित किया गया है आज की युवा पीढ़ी हमारे इस प्राचिन मनोंरजन के साधन रम्मत जिसका अर्थ खेलना है इसमें अपनी रूची को बढ़ाये वह हमारे प्राचीन संस्कारों को सुरक्षित रखें यही संदेश दिया गया है हमारी लोक धुने जो शास्त्रीयता से परे है उनका प्रभावपूर्ण गायन कर सके इसके लिए इस प्रबंध में लोक गायान शैलियों को स्वर बद्व किया गया है आज भी हमारा सामाज इस लोक नाट्य कला का ऋणी है जो हमारी भागते हुए जीवन को थोड़ा विराम देने का कार्य करता है हमारे पारम्परिक वाद्य नगाड़ा, हारमोनियम, खंजरि, चंग मंजिरे इत्यादि कि प्रधानता जो आज भी हमारे शहरी आंचल में जोर शोर से देखी जाती है इन वाद्यो का वादन सुरक्षित करने प्रयास में इन सभी वाद्यों का विवरण सचित्र इस शोध प्रबंध में दिया गया है इसी कड़ी में कवित एवं लोक धुने जो कि देश,सोरठ,मांड इत्यादि रागों में निबद्व है उनकी स्वर लिपि इस प्रबंध में दी गई है लोकनाट्यों में सारी रचानात्मक ऊर्जा लोकगायन शैलियों से हि अभिव्यक्त होती है इसी लिए लोक धुने लोक जीवन की आत्मा है इस आत्मा को प्रकाशित करने का प्रयास इस शोध प्रबंध में करने से लोगो में जागरूकता आयी है और आज की युवा पीढ़ी अपनी इस धरोहर को सजोंय रखने में अपनी उत्सुकता दिखाती है

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. लोकनाट्यों में संगीत–डॉ. ज्ञानवती वैद मोहता।
2. राजस्थान के लोकगीतों में अनुकरणात्मक प्रवृति– डॉ. मनोहर शर्मा।
3. संगीत का समाजशास्त्र– सत्यवती शर्मा।
4. राजस्थान के लोकगीत– डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल

साक्षात्कार

5. प्रहलाद मारजा व जतनलाल श्रीमाली (अचलेश्वर नवयुवक भायला मण्डल)
6. कन्हैयालाल जी रंगा व मदन जैरी (आजाद मण्डल)
7. रामेश्वर जी सोनी, सांवरलाल रंगा

❖◆❖